पारमार्थिक शिक्षण संस्था लाडनूं का :ष्टी पूर्ति समारोह

कालूगणी ने बोए संघ में विकास के बीज : आचार्य महाप्रज्ञ

बीदासर, 27 फरवरी।

''फाल्गुन शुक्ला दूज का दिन (फुलेरिया दूज) जो पूज्य कालूगणी का जन्म दिन है। वैसे तेरापंथ धर्मसंघ में सब आचार्यों का महत्त्व होता है किंतु पूज्य कालूगणी का महत्त्व इसलिए है कि आधुनिक युग के संदर्भ में विकास के बीज किसी ने बोए तो उनमें पहला नाम कालूगणी का आता है। आचार्य तुलसी ने उन बीजों को पल्लवन किया, उनको बहुत आगे बढाया वटवृक्ष बनाया। पर बीज का वपन करने वाले कालूगणी थे, इसलिए इस दिन का बड़ा महत्त्व है और पूज्य आचार्य तुलसी ने विक्रम संवत 2004 के आस-पास के दिनों को चुना, जो पूज्य कालूगणी द्वारा उक्त बीज थे उनका पल्लवन शुरू किया। पारमार्थिक शिक्षण संस्था सामने आई। अणुव्रत का प्रवर्तन हुआ और आदर्श साहित्य संघ का प्रारंभ हुआ। जो तीनों संस्थाएं तेरापंथ धर्मसंघ के विकास में योगभूत बनी।''

पूज्य आचार्य प्रवन ने फरमाया कि तेरापंथ को व्यापक बनाने में विश्व व्यापी बनाने में किसी का योग है तो वह है अणुव्रत का है। एक व्यापक दृश्टिकोण जो भगवान महावीर का दिया हुआ था उसे आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से उस धर्म को व्यापक और विश्वधर्म बनाया जिसका आज महत्त्व है। मैं संस्थाओं को नहीं देख रहा हूं आचार्य तुलसी की दूरदर्शिता, उनका गंभीर चिंतन और शुभ भविष्य के निर्माण की जो शक्ति उनमें थी वह देख रहा हूं। उनमें दूरदर्शिता थी मुझे याद है कि आचार्य श्री तुलसी ने कहा कि कोई दीक्षा लेने वाला आता है और जब पूछते हैं कि दीक्षा क्यों ले रहे हो? तो कहते हैं - ससांर की लाय लग रही है आदि-आदि। फिर जब वैरागी बनता तो आचार्य श्री तुलसी ने चिंतन किया कि यह समय तो ऐसे ही बीत रहा है पांच सात वर्श वैरागी बन कर रह रहे हैं कोई उपयोग नहीं हो रहा है। इस चिंतन में से पारमार्थिक शिक्षण संस्था का जन्म हुआ। आचार्य तुलसी को इतना विरोध सहना पड़ा कि लड़कियों को इकट्ठा न किया जाए। भारी विरोध था और आचार्य तुलसी की जन्मकुण्डली में एक योग था कि कोई भी काम करते विरोध तो होता ही। पहले विरोध फिर सबके समझ में आता कि यह तो बहुत अच्छा काम हुआ है, बहुत महत्त्वपूर्ण काम है।

पूज्य प्रवर ने फरमाया कि मैं एक बात सोच रहा हूं बौद्धिक विकास हो रहा है या नहीं और बौद्धिक विकास के गुणगान मैं इसको महत्त्व देता हूं पर बहुत ज्यादा नहीं देता। मूल बात यह है कसौटी हो कि वैराग्य कितना बढ़ा है? स्वभाव का निर्माण कैसे हो रहा है? उपशम का विकास कितना हो रहा है? और शांत सहवास, क्षमा और विनम्रता का विकास कितना हो रहा है? यह देखना है। केवल बौद्धिक विकास हमारा मानदण्ड नहीं बन सकता।

पारमार्थिक शिक्षण संस्था की सभी मुमुक्षु बहनों ने जब एक साथ दीक्षा लेने की अर्ज की तो उसके प्रत्युत्तर में आचार्य श्री ने फरमाया कि एक साथ दीक्षा लेने की बात न करें। सबसे ज्यादा सोचना है दीक्षा लेने वाले को और दीक्षा देने वाले को। इस पर हम और अधिक गहराई से चिंतन करेंगे, परीक्षा करेंगे और फिर बाद में दीक्षा देने की बात करेंगे। प्रतिक्रमण की बात है सबको आदेश दे सकते हैं, प्रतिक्रमण सीखो कोई आपत्ति नहीं है, किंतु दीक्षा की बात अभी नहीं करें। ृाष्टिपूर्ति पर एक नया मोड़ लें और वह नया मोड़ आध्यात्मिक कसौटियों से जांचें, उसको हमें 'लाडनूं' चतुर्मास में करना है। मैं मानता हूं कि आज तेरापंथ धर्मसंघ में जिस प्रकार की संस्था है अन्यत्र प्रयत्न बहुत हुए पर सफलता नहीं मिली। यह तो गुरुदेव का पुण्य भाग्य, बौद्धिकता, चिंतन और दूरदर्शिता का परिणाम है और तेरापंथ के भाग्य का परिणाम है कि ऐसा हो गया। पर इसको कैसे नया रूप देना इसकी अपेक्षा है।

युवाचार्य श्री महाश्रमण ने अपने प्रवचन में कहा कि ''मुझे एक बाद याद आती है कि जब मैंने जो दीक्षा लेने का निर्णय लिया था उसमें किसी न किसी रूप में कालूगणी का योग रहा है क्योंकि मैंने दीक्षा लेने का अंतिम निर्णय भाद्रव शुक्ला छठ के मध्याह्न में किया था। वह दिन पूज्य कालूगणी की पुण्य तिथि का दिन और अनुमानिक स्मरण के आधार पर मैंने कालूगणी का जप किया था, जप के बाद चिंतन शुरू किया, चिंतन के अनंतर मैंने यह निर्णय किया था कि मुझे साधु बनना ही है। इस उपकारी के रूप में मुझे कालूगणी याद आ रहे हैं। कालूगणी का महान अवदान यह है कि एक आचार्य के हाथ से दीक्षित या मुखार्विंद से दीक्षित दो सुशिष्यों का उनके ठीक बाद अनंन्तर तेरापंथ के उत्तराधिकारी के रूप में प्राप्त होना और वह भी युगप्रधान आचार्यों के रूप में प्राप्त होना यह अपने आप में पूज्य कालूगणी के लिए विशिष्ट बात है और हमारे स्मरण के लिए भी विशिष्ट बात हो जाती है।'' फाल्गुन शुक्ला द्वितीया का दिन पारमार्थिक शिक्षण संस्था के साथ जुड़ा हुआ है। पारमार्थिक शिक्षण संस्था हमारे साधु-साध्वियों या समण श्रेणी की दृष्टि से उसे कामधेनु पूरा कहा जाए अथवा न कहा जाए किंतु संस्था मध्यम श्रोत बना हुआ है जहां शिक्षण-प्रशिक्षण प्राप्त कर मुख्यतया समणियां, साध्वियां बनती है और कभी-कभी वैरागी भाई साधु या समण के रूप में प्राप्त होते हैं।

साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभा ने कहा कि आज का दिन फुलरिया दूज का दिन कहा जाता है, आज के दिन पूज्य कालूगणी का जन्म हुआ और उसी श्रृंखला में पारमार्थिक शिक्षण संस्था का जन्म हुआ, अणुव्रत का जन्म हुआ इस जन्म के साथ अनेक इतिहास जुड़े हुए हैं। पारमार्थिक शिक्षण संस्था दुनिया की विलक्षण संस्था है। इस दुनिया म ें जितनी कारे ं ह ैं वे सब युनिक होती हैं यानी उनके नंबर आपस में मिलते नहीं हैं तो ऐसा मानना चाहिए कि केवल तेरापंथ में ही नहीं जैन समाज में शिक्षण संस्थाओं में पूरे भारत में या पूरी दुनिया में पारमार्थिक शिक्षण संस्था अपने ढंग की एक संस्था है इसलिए इसे अद्वितीय संस्था, विरल

मौलिक या युनिक संस्था कह सकते हैं।

61 हजार रुपये की राशि का चेक भेंट

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा बीदासर के अध्यक्ष श्री बाबूलाल सेखानी व मंत्री श्री निर्मल बैगवानी ने पारमार्थिक शिक्षण संस्था लाडनूं को 61 हजार रुपये की राशि का चेक पारमार्थिक शिक्षण संस्था के उपाध्यक्ष श्री कन्हैयालाल छाजेड़ को भेंट किया।

– अशोक सियोल

99829 03770